CHAPTER 13, पद्‌माकर

PAGE 139, अभ्यास

11:13:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. पहले पद में कवि ने किस ऋतु का वर्णन किया है?

उत्तर- पहले छंद में कवि पद्‌माकर ने बसंत ऋतु का वर्णन किया है जो इस प्रकार है:-
कूलन में, केलिन में, कछारन में, कुंजन में,क्यारिन में ,कलिन-कलिन किलकंत है ।
कहै पद्‌माकर परागहु में, पौन हूँ में, पातन में पीकन, पलासन पगंत है ।
द्‌वार में, दिसान में, दुनि में, देस देसन में, देखो दीप-दीपन में, दीपत दिगंत है ।
वीथिन में, ब्रज में, नवेलिन में, बेलिन में, बनन में, बागन में, बगर्यो-बसंत है ।

11:13:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. इस ऋतु में प्रकृति में क्या परिवर्तन होते हैं?

उत्तर- इस बसंत ऋतु में प्रकृति में कुछ ऐसे परिवर्तन होते हैं जो निम्न है :-

(क) इस ऋतु में आसमान साफ रहता है। न तो ठंड और न ही गर्मी और न ही बारिश आती है

(ख) नए पल्लव पेड़ों में नए पल्लव आते हैं, आमों के पेड़ो में तथा अन्य सभी वृक्षों में नए पत्ते आते है । और कोयल की कु - कु पुरे वातावरण को खुशनुमा बनाती है ।

(ग) इस मौसम में विभिन्न फूल खिलते हैं।

(घ) पीले सरसों का फूल पूरे क्षेत्र को सुंदर बनाता है इस दृश्य को देख कर मैं इस मौसम में ही सुखद महसूस करता हूँ।

11:13:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. 'औरै' की बार-बार आवृत्ति से अर्थ में क्या विशिष्टता उत्पन्न हुई है?

उत्तर- 'औरै' की बार-बार आवृत्ति से हर बार पद का सौंदर्य बढ़ जाता है। 'औरे' शब्द का प्रयोग वसंत ऋतु के सौन्दर्य को बहुत ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। वसंत ऋतु के कारण लोंगो के मन में आने वाले परिवर्तन को इस शब्द के माध्यम से बहुत ही प्रभावी ढंग से बताया जा सका है। यह शब्द बताता है की वसंत ऋतु के कारण पहले से सुन्दर धरती की सुन्दरता में और वृद्धि हो जाती है।

11:13:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. 'पद्माकर' के काव्य में अनुप्रास की योजना अनूठी बन पड़ी है।' उक्त कथन को प्रथम पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मैं पूर्णतया इस बात से सहमत हूँ की पाठ में दिए गए पद्माकर के उदाहरणों अगर देखा जाये तो हम पाते है की उन्होंने इस पाठ में अलंकरण के उपयोग में कुशलता हासिल कर ली हैं । उन्होंने जगह-जगह से वाक्यों में अलंकार का ऐसा गठजोड़ किया है कि उनका ये प्रयोग अनूठा हो गया है। इसके उदाहरण इस प्रकार हैं :-

जैसे - भीर-भौर , छलिया छबीले छैल और छबि छवै गए

,गोकुल के कुल के गली के गोप गाउन के ,कछू-को-कछू भाखत भनै ,चलित चतुर ,चुराई चित चोराचोरी ,मजुल मलारन ,छवि छावनो इत्यादी ।

ऊपर दिए गए उदाहरण पद्माकर की अनूठी अनुप्रास अलंकार योजना पर मुहर लगाते हैं । कवि ने इस प्रकार के प्रयोग करके रचना को और भी अनूठा बना दिया हैं ।

11:13:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. होली के अवसर पर सारा गोकुल गाँव किस प्रकार रंगों के सागर में डूब जाता है? पद के आधार पर लिखिए।

उत्तर- इस पाठ में पद्माकर ने गोकुल में खेली जाने वाली होली का बहुत सुंदर और प्रभावी वर्णन किया है। गोकुल में होली का त्यौहार मनाया जा रहा है । घरों के सामने गोपियों द्वारा होली खेली जा रही है और वे एक दुसरे के आगे-पीछे दौड़ रही है। होली का उल्लास है। एक गोपी कृष्ण प्रेम के श्याम रंग में भीगी हुई है । वह इससे भटकना नहीं चाहती है, वह इसमें डूबना चाहती है। कोई भी किसी का लिहाज नहीं कर रहा है । उनके बारे में कुछ भी कहना संभव नहीं है।

11:13:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. कृष्ण प्रेम में डूबी गोपी क्यों श्याम रंग में डूबकर भी उसे निचोड़ना नहीं चाहती?

उत्तर- कृष्ण प्रेम में डूबी गोपियाँ को ये रंग बहुत प्रिय है क्यों की ये रंग कृष्ण का रंग है। और वो इस रंग से खुद को जुदा नहीं करना चाहती। वो इस रंग में डूब कर श्याम को अपने करीब पति है। इसलिए वो श्याम रंग को निचोड़ना नहीं चाहती है।

11:13:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. पद्माकर ने किस तरह भाषा शिल्प से भाव-सौंदर्य को और अधिक बढ़ाया है? सोदाहरण लिखिए।

उत्तर- इस पाठ को पढ़ने के बाद हमें ये भली - भांति ज्ञात होता है कि पद्माकर की भाषा शिल्प में कितनी विशेषताएँ थी। उन्होंने सुव्यवस्थित एवं सरल भाषा का उपयोग करके भाषा के प्रवाह को

बनाए रखा है। पाठक उनकी भाषा सहजता से समझ सके उसके लिए उन्होंने भाषा को काफी सरल बना दिया है। इससे पता चलता है कि भाषा पर उनकी अच्छी पकड़ है। उन्होंने ब्रज भाषा का मधुर और सूक्ष्म रूप प्रस्तुत किया है ।जिसका उदाहरण इस प्रकार हैं -

औरे भांति कुंजन में गुंजरत भीर भौंर

(क) छलिया छबीले छैल और छबि छवै गए ।

(ख) गोकुल के कुल के गली के गोप गाउन के

उपरोक्त पंक्तियों में ‘छ’, ‘क’ तथा ‘ग’ अक्षरों के प्रयोग ने रचना को प्रभावी बना दिया है। इसीलिए उनकी रचना में चित्रात्मकता का समावेश सहज है। अलंकार जीवित हो गए है । ऐसा लगता है कि मन की भावनाएं रचना से बाहर आ गई और उन में जीवन का संचार भर गया है ।

PAGE 140, अभ्यास

11:13:1: प्रश्न-अभ्यास:8

8. तीसरे पद में कवि ने सावन ऋतु की किन-किन विशेषताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है?

उत्तर- इसकी विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

(क) बगीचे में भंवरों का स्वर फ़ैल गया है । उनका गुंजार मल्हार राग के समान प्रतीत होता है ।

(ख) इस ऋतू के प्रभाव से ही अपना प्रिय प्राण से अधिक प्यारा लगता है ।

(ग) मोर की ध्वनि हिंडोलों की छवि सी लगती है ।

(घ) यह प्रेम की ऋतू है ।

(ङ) झूले-झूलने के लिए यह सर्वोत्तम ऋतू है ।